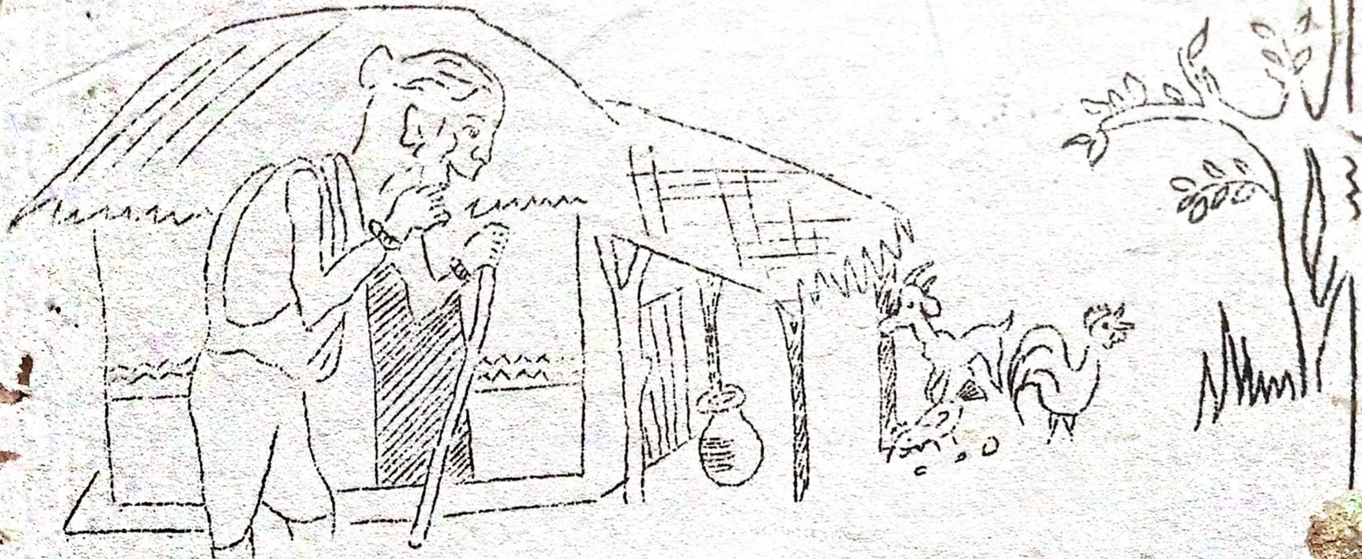
चल मेरे मटके ठुम मक ठुम





एक बुढ़िया थी

वह अकेली घर में रहती थी

बुढ़िया ने कहा,

मैं अपने बेटे के घर जाना चाहती हूँ

पर मेरे पास कोई घोड़ा नहीं है

मेरे पास कोई गाडी नहीं है

मैं क्या करूँ ?

एक दिन बुढ़िया को एक बड़ा मटका मिला

उसे देख बुढ़िया बहुत खुश हुई

बुढ़िया मटके में बैठ गई।

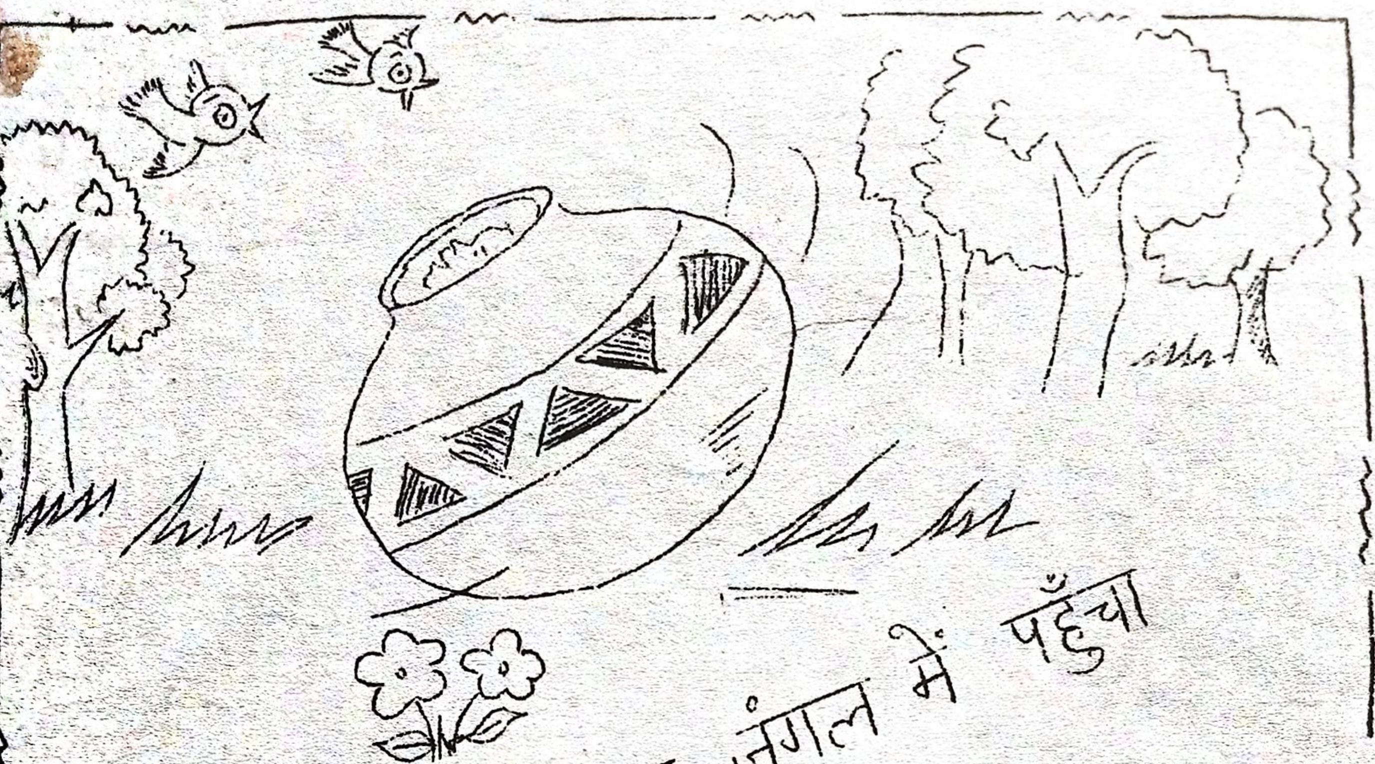
बुढ़िया ने कहा,

चल मेरे मटके ठुम मक ठुम

कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम।

मटका चलने लगा





लुढ़कते लुढ़कते मटका जंगल में पहुँचा

जंगल में एक बाघ था
जंगल में एक भेड़िया था
जंगल में एक भालू था।





बाघ ने कहा

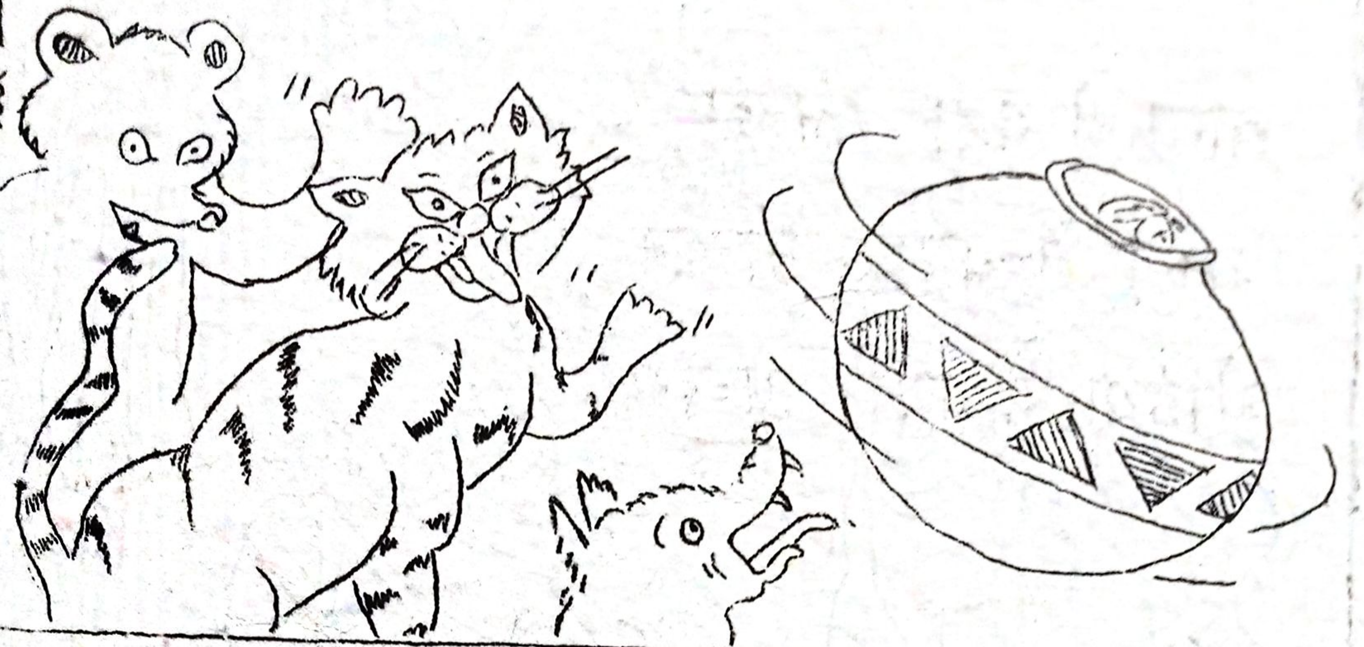
मैं बुढ़िया को खाना चाहता हूँ ।

भेडिया ने कहा

मैं बुढ़िया को खाना चाहता हूँ ।

भालू ने कहा

मैं बुढ़िया को खाना चाहता हूँ ।



बुढ़िया ने कहा,

अभी मुझे मत खाओ, अभी मैं
दुबली हूँ ।

मैं बेटे के घर जाती हूँ
वहाँ बहुत अच्छा खाना मिलेगा।
तब मैं मोटी ताजी हो जाऊँगी ।
जब मैं अपने बेटे के घर से लौटूँ
तब मुझे खा लेना ।

बाघ ने कहा - अच्छा

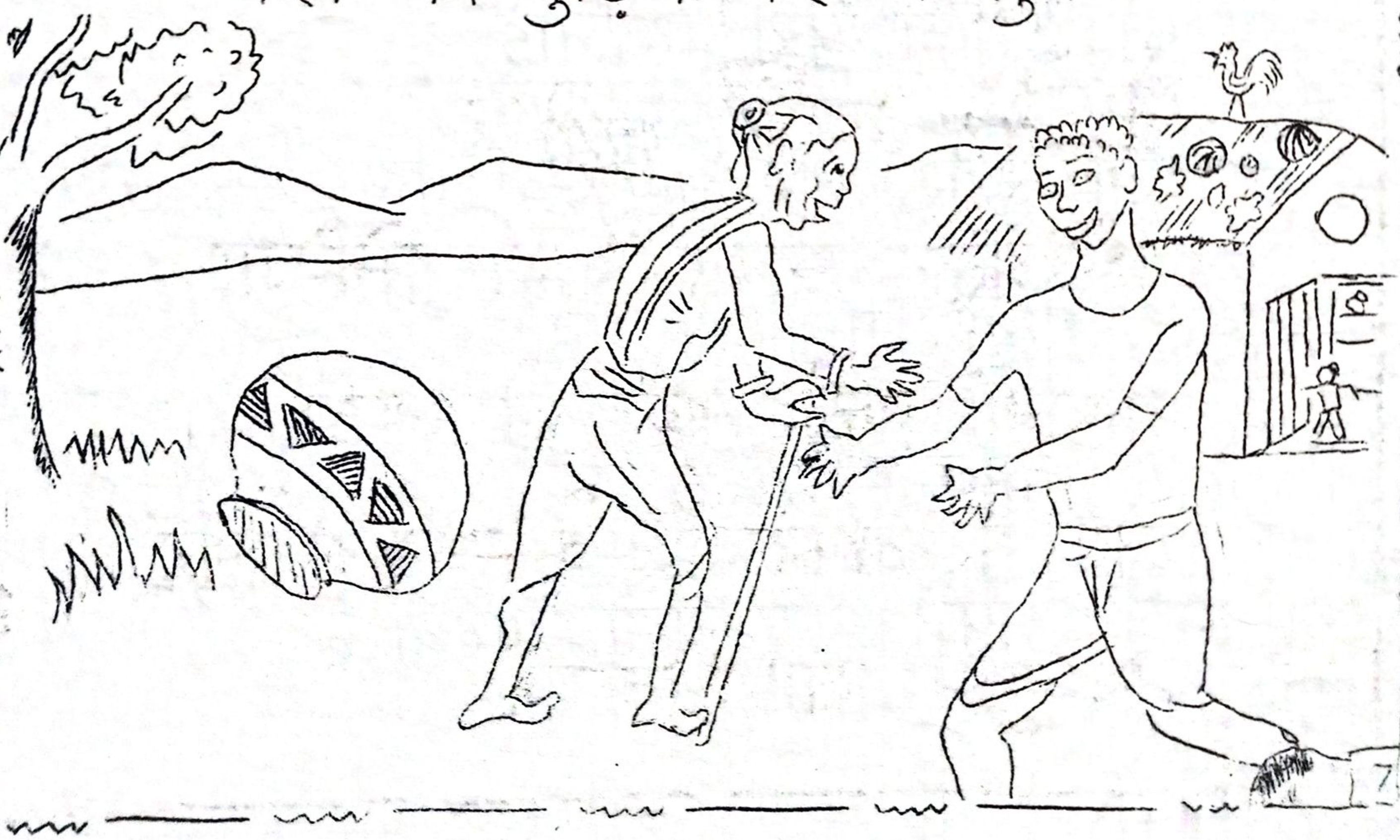
भालू ने कहा - अच्छा

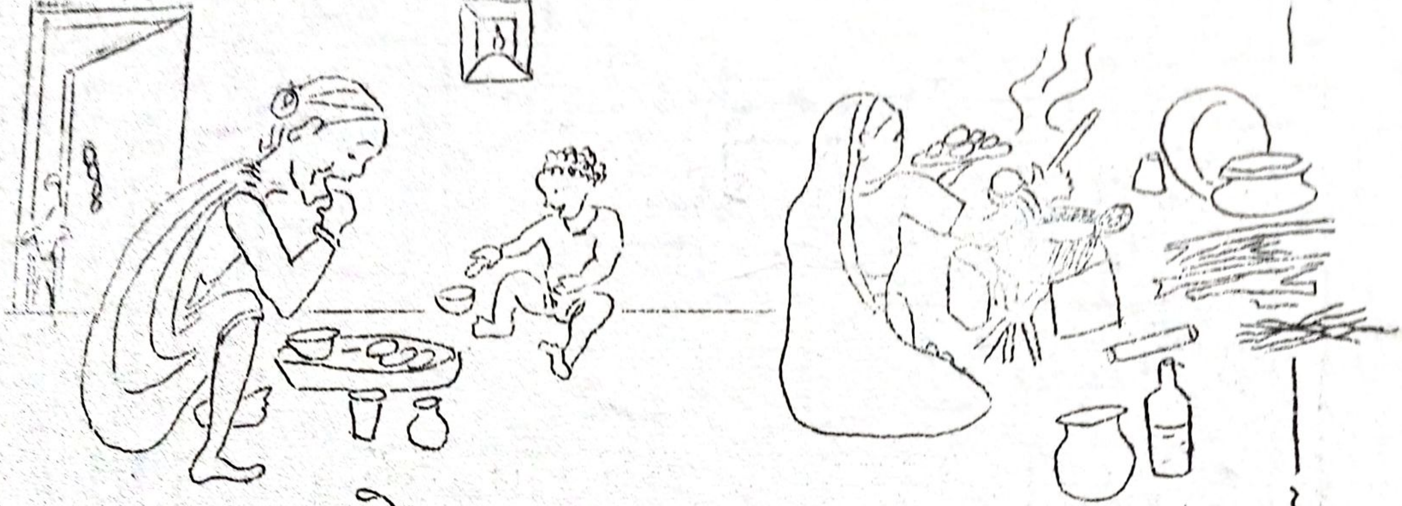
भेड़िया ने कहा - अच्छा

बुढ़िया बहुत खुश हुई और बोली

चल मेरे मटके ठुम मक ठुम

कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम





मटका चलने लगा

बुढ़िया अपने बेटे के घर जा पहुँची

बहू ने उसको खीर खिलाई

बहू ने उसको पूरी खिलाई

बुढ़िया खीर और पूरी खा कर

बहुत मोटी ताजी हो गई

बुढ़िया ने कहा,

मैं अपने घर जाना चाहती हूँ ।

बुढ़िया मटके में बैठ गई
बुढ़िया ने कहा,

चल मेरे मटके ठुम मक ठुम
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम

लुढ़कते लुढ़कते मटका जंगल में
पहुँचा ।



जंगल में बाघ, भेड़िया

और भालू

बुढ़िया का रास्ता देख रहे थे।



बाप्प ने कहा

आओ बुढ़िया, मैं तुम को खाऊँ ।

भेडिया ने कहा

आओ बुढ़िया, मैं तुम को खाऊँ ।

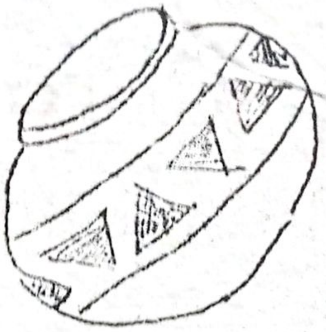
भालू ने कहा

आओ बुढ़िया, मैं तुम को खाऊँ ।

बुढ़िया ने कहा
पहले दो दो मुट्ठी रेत लाओ
सब जानवरों ने कहा, अच्छा
बाघ दो मुट्ठी रेत लाया
भेड़िया दो मुट्ठी रेत लाया
भालू दो मुट्ठी रेत लाया







बुढ़िया ने कहा

आओ तुम सब मुझ को खाओ

सब जानवर बुढ़िया पर झपटे

बुढ़िया ने झटपट रेत

उनकी आँखों में फेंका

जानवर आँख मलने लगे

जानवर कुछ न देख सके

पर बुढ़िया हँसने लगी ।



बुढ़िया ने कहा

चल मेरे मटके ठुम मक ठुम
कहाँ की बुढ़िया कहाँ के तुम

मटका जल्दी जल्दी चलने लगा

मटका जल्दी जंगल के बाहर पहुँच गया

बाघ आँख मलता रहा

भेडिया आँख मलता रहा

भालू आँख मलता रहा

सब जानवर आँख मलते रह गये

पर बुढ़िया हँसती चली गई



तुम्हारे पास कोई अच्छी
कहानी हो तो लिख भेजना, इन्तजार में
अनुपमा, नीता, उषा, बाल साहित्य भण्डार
शाहपुर- 460440, जि. बैतूल, म.प्र